स्नातक द्वितीय खण्ड
अनुषंगिक (Subsidiary)

डॉ० अरुण कुमार ठाकुर
मैथिली विभाग
जे० एन० कॉलेज मधुबनी

'खोंता आ चिड़ै'

प्रो० मायानन्द मिश्र बहुमुखी प्रतिभासम्पन्न साहित्यकार छथि। ई अपन बहुमुखी प्रतिभाक बलें कविता, कथा, उपन्यास आलोचना आदि सभ विधामे अपन उत्कृष्टता प्रदर्शित कयलनि। प्रो० मायानन्द मिश्रक चारिगोट उपन्यास प्रकाशित अछि — बिहाड़ि पात पाथर, खोंता आ चिड़ै, सूर्यास्त आ मंत्रपुत्र।

'खोंता आ चिड़ै'मे गामक बदलैत परिवेशक स्वाभाविक चित्र खींचल गेल अछि। मध्यमवर्गीय व्यक्तिक बीच स्वार्थलोलुप संघर्षकें देखाओल गेल अछि। एकर अतिरिक्त एहिमे निम्नवर्गीय युवतीक कोमल ओ उदात्त पक्षक बड़ कलात्मक वर्णन लेखक कयने छथि।

(1) 'खोंता आ चिड़ै' प्रेम कथापर आधारित उपन्यास अछि जकर नायक सिरीलाल ओ नायिका रुखनी छथि। सिरीलालकें अपन मातृकमे रुखनीसँ भेंट होइत छैक। बाध्यमे इनारपर पानि भरबाकाल उनकें पहिलबेर भेंट होइत छैक। रुखनी सिरीलालक मुहेँ शहरक गप्प सुनि आनन्दित होइत अछि सिनेमा हॉलक नाम कहैत अछि। मेम साहेब ओ साहेबक खिस्सा कहैत अछि। रुखनीकेँ ई बात नव लगैत छैक ओ एहि गप्प सुनबामे निमग्न भए आ हठात बाजि उठैत अछि — "मुँहझौंसा ठुआएल-मकुआएल कोना ठाढ़ छें! बाबूकें पियास ने लागल हेतै।" सिरीलाल इनारसँ पानि निकालबाक हेतु इनारसँ डोल खसबैत अछि मुदा डोलक डोरी छोट भऽ जाइत छैक। ओ रुखनीसँ साड़ीक आँचर माँगैत अछि आ ओहि आँचरमे डोरी बान्हि इनारमे खसबैत अछि। आँचर डोलमे बन्हबाक कारणेँ रुखनीक आँचर शरीर उघार भऽ जाइत छैक। ओकर उघार शरीरकें देखि सिरीलाल मोहित भऽ जाइत अछि, आकर्षित भऽ जाइत अछि, ओहीठामसँ एक-दोसराक प्रति स्नेहक भाव बढ़ऽ लगैत छैक।

उनुक बीच प्रेम तखन आर प्रगाढ़ भऽ जाइत छैक जखन सिरीलाल मातृकसँ बिदा होएबाकाल दुखनीसँ कहैत अछि– "हम जाइत छी।" दुखनीक मुँह मलीन भऽ जाइत छैक। नोरायल आँखिए जवाब दैत अछि– तऽ जा ने होइ छै। हम के दियौ रुकए। सिरीलालक करेज दरकि जाइत छैक।

दुखनीक बिवाह पहिने भऽ गेल छैक। दुखनीक सासुर आ सिरीलालक घर एकहि गाममे छैक। दुखनी तोष दैत कहैत अछि– 'फेर ओहू गाममे तँ भेंट होइते करतैक। आ उनुमे कहियो भेंट होअए लगैत अछि। परस्पर भेंट होइत गेलाक उनुमे प्रीति आर प्रगाढ़ होइत गेल। दुखनी अपन पति मिसरीलालकेँ तिरस्कार करऽ लागल आ सिरीलालक प्रति
(2) स्नेह देखबऽ लागल। ओ सिरीलालसँ सम्बन्ध करऽ चाहैत छल। सिरीलाल सेहो दुखनीक प्रति आकर्षित छल। गामक जमिन्दार ओझा गिरहथ सिरीलालकेँ मार लऽ कऽ गोविन्दपुर जएबाक हेतु कहैत छथि किन्तु ओ मार लऽ कऽ जएबामे असमर्थता प्रकट करैत अछि। कारण छल दुखनी जे ओकरा निरमली बजौने छलि। मार लऽ कऽ जएबाक कारणेँ ओ समय पर निरमली नहि पहुँचि सकैत छल। गिरहथक द्वारा ओ अपमानित होइत अछि मुदा तकर ओकरा कोनो परवाह नहि छैक कारण ओकरा लगन्ध परसू ओकर प्रेमिका दुखनीक संग भऽ जएतैक।

मुदा सिरीलाल आ दुखनीमे सम्बन्ध नहि भऽ पबैत अछि। जखन दुखनी पति मिसरीलाल ओकर निशानी कनौसी आपस करऽ अबैत छैक तँ दुखनीक हृदय पसीजि जाइत छैक। ओकर हृदय द्रवित भऽ जाइत छैक आ ओ अपन पतिक संग बिदा भऽ जाइत अछि। चिड़ै सभ जे साँझक समय अपन खोंता बिसरि गेल छल से पुनः अपन खोंतामे आपस आबि जाइत अछि।

Scanned with CamScanner

स्त्रोत- आ- विठेइक प्रसंग- डा० जयकृत मिश्र स्वर्वेत- हरि- It is more successful in depicting this voilence of passion in the life of a ~~[illegible]~~ ~~ia~~ heroine of the lower class, whose husband is importent. The tenderness of her husbands affaction, however, touches her so much that she rises to great and indeed tragic heights."